होली संग्रह

भड़कटिया होली संग्रह

संग्रहकर्ता और प्रकाशक

बिपिन चंद्र जोशी

भड़कटिया, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड

मो0 नं0 9997021204, 9410317701

होली संग्रह

भड़कटिया होली संग्रह

संग्रहकर्ता और प्रकाशक

बिपिन चंद्र जोशी

भड़कटिया, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड

मो0 नं0 9997021204, 9410317701

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

"फ़ागुन ऐसो मतवालो" ग्राम - भड़कटिया (सोरघाटी पिथौरागढ) की पारंपरिक खड़ी होलियों का संकलन

साथियो नमस्कार ।

हम आपके सामने भड़कटिया खड़ी होली संग्रह ***" फागुन ऐसो मतवालो "*** का प्रथम अंक प्रस्तुत करने जा रहे हैं। अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को मजबूती से आगे बढ़ाने और पिछली पीढ़ियों के महत्वपूर्ण योगदान को स्थाई बनाने के उद्देश्य से इसे प्रकाशित किया जा रहा है। यह संकलन गाँव भड़कटिया ;पिथौरागढ़द्ध के प्रशि(होलियार स्व० जीवानन्द जोशी जी ;हवलदार बूबूद्ध की पुण्यस्मृति को समर्पित है। उम्मीद है कि स्व० जीवानन्द जोशी के द्वारा हस्तलिखित होलियों का यह संकलन इस नये रूप में अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचेगा। उनके हस्तलिखित संग्रह को उपलब्ध कराने के लिए हम उनके परिवार के आभारी हैं।

इस संकलन के माध्यम से हम गांव के होली उत्सव के इतिहास में झांकने की भी कोशिश कर रहे हैं और भविष्य में इसे और भी बेहतर बनाने का प्रयास भी कर रहे हैं।

हम सबको उम्मीद है कि आपको हमारा यह छोटा सा प्रयास पसन्द आएगा। सभी सहयोगियों और शुभेच्छुओं का धन्यवाद।

समस्त ग्रामवासी

ग्राम – भड़कटिया

जिला– पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड)

ii

साथियो नमस्कार ।

हम आपके सामने भड़कटिया खड़ी होली संग्रह **" *फागुन ऐसो मतवालो* "** का प्रथम अंक प्रस्तुत करने जा रहे हैं। अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को मजबूती से आगे बढ़ाने और पिछली पीढ़ियों के महत्वपूर्ण योगदान को स्थाई बनाने के उद्देश्य से इसे प्रकाशित किया जा रहा है। यह संकलन गाँव भड़कटिया ;पिथौरागढ़द्ध के प्रशि(होलियार स्व० जीवानन्द जोशी जी ;हवलदार बूबूद्ध की पुण्यस्मृति को समर्पित है। उम्मीद है कि स्व० जीवानन्द जोशी के द्वारा हस्तलिखित होलियों का यह संकलन इस नये रूप में अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचेगा। उनके हस्तलिखित संग्रह को उपलब्ध कराने के लिए हम उनके परिवार के आभारी हैं।

इस संकलन के माध्यम से हम गांव के होली उत्सव के इतिहास में झांकने की भी कोशिश कर रहे हैं और भविष्य में इसे और भी बेहतर बनाने का प्रयास भी कर रहे हैं।

हम सबको उम्मीद है कि आपको हमारा यह छोटा सा प्रयास पसन्द आएगा। सभी सहयोगियों और शुभेच्छुओं का धन्यवाद।

समस्त ग्रामवासी
ग्राम – भड़कटिया
जिला– पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड)

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

"फ़ागुन ऐसो मतवालो" ग्राम - भड़कटिया (सोरघाटी पिथौरागढ) की पारंपरिक खड़ी होलियों का संकलन

नमस्कार मित्रो !

आज हम आपको भड़कटिया की होली के इतिहास से रू-ब-रू कराते हुए समय के साथ-साथ होली में हुए परिवर्तन पर भी एक निगाह डालने जा रहे हैं।

हमारे पर्वतीय समाज में त्योहारों का विशेष महत्व है। होली-उत्सव जैसे त्योहार हमारे समाज को एकजुट रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिला मुख्यालय से मात्र ६ कि०मी० दूर स्थित भड़कटिया गाँव में भी सामूहिक रूप से मनाई जानी वाली होली की परम्परा कई पीढ़ियों से लगातार चली आ रही है। तीन ओर से सेना छावनी से घिरा हुआ भड़कटिया गांव शैक्षिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से काफी समृ(माना जाता है। गांव के पूर्व दिशा में नौला देवता का नौलाथाना नामक मंदिर बना है। पश्चिम दिशा में सोरघाटी के लोक देवता देवल समेत का सेरा देवल मंदिर है। उत्तर दिशा में पहाड़ी के ऊपर माँ भगवती का देवी थाना नामक पूजा स्थल है और दक्षिण दिशा की तरफ लोक देवता गंगनाथ का थान है। गांव के मध्य में भिन्डूखोला नामक जगह पर भगवान शिव का सुन्दर मंदिर बना है व गाँव के हृदय स्थल पर गोलु देवता ;ग्वाला गोरियाद्ध का थान स्थित है। गाँव के लगभग हर परिवार से एक व्यक्ति सेना मे कार्यरत है। यूँ तो गांव में सभी त्योहार काफी शालीनता व गौरवपूर्ण रूप से मनाये जाते हैं, लेकिन भड़कटिया गांव में मनाई जाने वाली परम्परागत होली पूरे इलाके में प्रशि(है।

एक अनुमान के अनुसार भड़कटिया में होली उत्सव की शुरूआत लगभग १०० वर्ष पूर्व हुई थी। प्रारम्भिक दिनों में यह होली तत्कालीन ग्राम प्रधान स्व० श्रीडुण्ग जोशी जी के आंगन में हुआ करती थी। सन्

१९३५ में श्रीडुण्ग जी की हवेली में आग लगने व गांव की आबादी बढ़ने के कारण होली उत्सव सर्व-सम्मति से स्व० श्री तुलसी दत्त जोशी जी के आंगन में मनाया जाने लगा। आज भी इसी स्थान पर यह आयोजन होता है। गांव में हर साल होली उत्सव की शुरूआत होली के खले में एकादशी के दिन पूजा और विधि-विधान के साथ चीर बांध कर की जाती है। पूरे कुमाऊं क्षेत्र में प्रचलित होली चीर की प्रथा के अन्तर्गत आस-पास के कई गांव मिलकर किसी एक गांव में पेड़ की डाल पर ध्वजा रूपी चीर बांधकर इसके चारों तरफ होली खेलते हैं। ऐसे ही भड़कटिया में चीर रस्म को निभाने के लिए वड्डा जाना पड़ता था। एवं चतुर्दशी के दिन भड़कटिया के होलियार दल-बल व ढोल के साथ वड्डा जाकर होली खेलते थे लेकिन कुछ अप्रिय घटनाओं के चलते होली का वड्डा जाना बन्द कर दिया गया। पर चीर बांधने के लिए एकादशी को होलियारों को वड्डा जाना पड़ता था। इस समस्या को देखते हुए स्व० श्री कीर्ति बल्लभ जोशी जी द्वारा मथुरा जाकर चीर को भड़कटिया गांव में लाया गया जो कि होलियारों के साथ-साथ पूरे गांव के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी। अब चीर भड़कटिया गांव में ही बांधा जाता है व चीर स्थल पर पूजा अर्चना के साथ होली का शुभारम्भ किया जाता है।

प्रारम्भ से ही मे गांव में बहुत उत्साह से होली का आयोजन होता आ रहा है। कुछ साल पहले तक लोगों के लिए होली की पारम्परिक पोशाक ;सफेद कुर्ता-पैजामा और सफेद टोपीद्ध सिलवाई जाती थी। बाहर नौकरी कर रहे लोग छुट्टी लेकर सपरिवार होली मनाने गांव आते थे। कुछ हद तक यह परम्परा आज भी कायम है। मनोरंजन के साधनों की कमी के दौर में दिनभर होली गायन के बाद रात में ग्राम वासियो द्वारा तैयार किये गये नाटक और रास लीला का मंचन भी किया

जाता था। गांव के युवा लोग ही नाटकों में अभिनय किया करते थे। कुछ लोग जोकर की भूमिका के लिए ही प्रसि(थे। इन नाटकों में नैतिक शिक्षा से सम्बन्धित राजा हरिश्चन्द्र, ध्रुव, सती-सावित्री जैसे ध ार्मिक और ऐतिहासिक चरित्र दर्शाये जाते थे। समाज में आ रहे बदलाओं के साथ नाटक मंचन वाला सिलसिला धीरे-धीरे समाप्त हो गया उस समय भी दिन में खड़ी होली हुआ करती थी और रात को बारी-बारी लोग अपने घरों में बैठक होली का आयोजन किया करते थे। छरड़ी के पहले दिन होलियारों का पूरा दल देवी मंदिर और सेरादेवल जाने के बाद कोटली गांव में जाकर होली गाते थे। कोटली में सर्वप्रथम स्व० श्री शेर सिंह जी के आंगन में होली गायन होने के बाद होलियार क्रमशः स्व० श्री प्रेम सिंह, भैरव जंग, ईश्वरी दत्त भट्ट व अन्त में बची सिंह सौन जी के आंगन में जमा होकर होली गायन करते थे। तब एक परम्परा हुआ करती थी कि होली जिस आंगन में जाती थी उस परिवार के द्वारा होलियारों को एक गुड़ की भेली देने के बाद अल्पाहार कराया जाता था। इस तरह एकत्रित हुए गुड़ को होली समापन के उपरान्त पूरे गांव में प्रसाद स्वरूप बांटा जाता था। अब आजकल गुड़ की जगह होलियारों द्वारा मिठाई का वितरण किया जाता है।

आज भी होलियार छरड़ी के पहले दिन भगवती मंदिर ;देवीथानाद्ध जाने के बाद सेरादेवल मंदिर में जाकर देव होली का गायन करते हैं। इस दिन गांव के युवाओं द्वारा होली के खले में अल्पाहार का प्रबन्ध किया जाता है। होली के मंदिर प्रस्थान करने बाद गांव की महिलाऐं होली के खले में होली गायन करती हैं व होलियारों द्वारा बनाये अल्पाहार को ग्रहण करती हैं।

पूर्व में जब गांव के होलियार होली खेलने अन्य गांव में जाते

थे तो महिलाओं द्वारा ही होली के खले में होली गायन किया जाता था। अब यह परम्परा सिमट कर मात्र एक दिन रह गई है। अन्य गांवों से भी कई होलियार यहां होली खेलने आया करते थे। प्रारम्भ में स्व० श्री तारा दत्त जोशी फिर स्व० जीवानन्द जोशी व आजकल श्री रघुवर दत्त जोशी, हीरा बल्लभ जोशी व जगदीश चन्द्र जोशी जी के संरक्षण में होली खेली जाती है। गांव के युवा अब भी इस त्योहार में काफी बढ़चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। होली से २० दिन पूर्व होली कमेटी की बैठक होने के बाद चन्दा एकत्र करना शुरू किया जाता है व ढोल, चिमटा आदि वाद्य यन्त्रों को ठीक कर काफी उत्साह पूर्ण ढंग से होली मनाई जाती है।

अन्य दिनों होली दो - तीन बजे से शुरू होकर देर सांयाकल तक गाई जाती है। रात को लोग बारी-बारी अपने घरों में होली गायन का आयोजन करवाते हैं छरड़ी की पूर्व संध्या को होलिका दहन के साथ होली गायन किया जाता है। छरड़ी की सुबह होलियारों को अबीर की जगह सर्वप्रथम विभूती लगाई जाती है। सुबह नौ बजे से लगभग ग्यारह बजे तक खले में होली गायन के बाद होली सर्वप्रथम प्रकाश जोशी जी के आंगन में जाती है। यहां पर होली गायन होने के बाद होली को पवन जोशी जी द्वारा आमंत्रित किया जाता है। अबीर गुलाल के बीच होली गायन करने के बाद श्री ललित जोशी जी द्वारा होलियारों को उनकी दुकान में गायन हेतु आमंत्रण भेजा जाता है। यहां पर आलू, पान व चाय से होलियारो का स्वागत किया जाता है, लेकिन होलियारों द्वारा यहां के पान को विशेष महत्व दिया जाता है। इसके उपरान्त सभी होलियार गले मिलकर एक दुसरे को शुभाशीष देते हुए होली का समापन कर देते हैं। कुछ युवा होलियार परम्परा को जीवित रखने के लिए अभी भी

x

नदी . जाकर स्नान करने के बाद ईष्ट देवता देवल समेत बाबा के मंदिर में जाकर मिठाई का भोग लगाकर होली का समापन करते हैं।

गांव के पुराने होलियारों के रूप में स्व० श्री गौरी दत्त जोशी, स्व० श्री देवी दत्त जोशी, स्व० श्री लक्ष्मी दत्त पन्त, स्व० श्री लक्ष्मी दत्त पुनेठा, स्व० विद्यासागर जोशी रूईना से स्व० राय सिंह पाण्डेय कोटली से स्व० नारायण सिंह व कुसौली से स्व० परमानन्द भट्ट को आभी भी याद किया जाता है।

श्री रघुवर दत्त जोशी, श्री हीरा बल्लभ जोशी व श्री देवकी नन्दन जोशी जी से प्राप्त जानकारी के आधार पर—

– बिपिन चन्द्र जोशी
भड़कटिया

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

"फ़ागुन ऐसो मतवालो" ग्राम - भड़कटिया (सोरघाटी पिथौरागढ) की पारंपरिक खड़ी होलियों का संकलन

iii

बुरांश, आड़ू - पुलम, पैंया -नाशपाती के फूलों से भरे हुए रंग-बिरंगे पेड़, इस बात का संकेत देते हैं कि होली के त्योहार की तैयारियां शुरू करने का वक्त आ चुका है। हर साल बसन्त का मौसम आते ही अपने गांव भड़कटिया ;पिथौरागढ़ में बचपन के दिनों की पांच दिवसीय होली की यादें चटक होकर दिमाग पर छाने लगती है। साल भर के इंतजार के बाद होली के दिन जैसे-जैसे नजदीक आते थे, गांव के किशोर और नवयुवक साथी मिलकर घर-घर जाते और सामुहिक होली उत्सव के लिए चन्दा जुटाना शुरू कर देते थे।

आज से २०-२५ साल पुराने दिनों को याद करता हूं तो समझ आता है कि होली का यह आयोजन हम लड़कों के लिए सामाजिक कामों के 'इवेंट- मैनेजमेंट' की पहली ट्रेनिंग थी । दो-तीन हफ्ते पहले से चन्दा जुटाकर धन की व्यवस्था करना, ढोल-दमौटी, ढपली जैसे जरूरी संगीत वाद्यों को निकालकर मरम्मत करवाना बाजार जाकर, अबीर,गुलाल और सौंप-सुपारी खरीदना, रंग घोलने के लिए तांबे के तीन-चार बड़े तौले ;कढ़ाइयांद्ध जुटाना और होली के प्रसाद के रूप में पूरे गांव वालों को बँटने वाले आलू के गुटके की रसोई संभालना इतना सब हो जाने के बाद पूरे पाँच दिन शराब-हुड़दंग और झगड़ों से बचा कर हर शाम होली के खुले आंगन में खड़ी होली और रात को किसी न किसी के घर पर बैठ कर होली को शान्ति पूर्ण ढंग से निपटाना वास्तव में मैनेजमेंट का नाम ही काम है। गांव के बच्चे, नवयुवक, बुजुर्ग और महिलाऐं सब मिलकर इस काम को जिस खुबसुरती से संम्पन्न करवा देते थे। वो अनूठा अनुभव होता था।

मैदानी इलाकों की एक दिवसीय हुड़दंगी होली से अलग पहाड़ की होली कई मायने से इसीलिए खास है। क्योंकि यहाँ की होली में रंगो

iv

के अलावा नाच-गानों के अलावा धार्मिकता भी घुली हुई है। मुझे याद है कि हमारे गाँव भड़कटिया की होली के आंगन में कोटली, खईना, दिंगास, खतेड़ा, कुसौली और आस-पास के कई अन्य गांव के होलियार शामिल होते थे। यहाँ जात-पात उम्र और बड़े-छोटे सामाजिक रूतबे का कोई अन्तर नहीं होता था। होली के बड़े ढोल की थाप पर सभी होलियारों के दो समूह के पैरों को लयब(तरीके से आगे-पीछे करते हुए होली गाते थे। और बीच में किसी क्षण दाहिना हाथ उठाकर पीछे पलटते हुए नृत्य मुद्रा बनाकर फिर वापस होली गाने लगते थे। बुजुर्ग लोग बीच-बीच में आंगन की मेड़ पर बैठकर सुस्ता लेते थे और एक कोने पर बच्चों के झुण्ड की उछल-कूद भी चल रही होती थी। गांव के ही किसी घर में महिलाओं की हंसी-मजाक और नाच-गाने वाली होली भी जोर-शोर से चल रही होती थी। इसके बाद महिलाऐं भी होली के आंगन में होली देखने आ जाती थीं।

आज भी शुरूआत के तीन दिन होली के आंगन में भी राग-रंग का ये उत्सव मनाया जाता है। चौथे दिन गांव के लोक-देवताओं के मंदिर में जाकर होली खेली जाती है। अंतिम दिन यानि छलड़ी के दिन रंगों का प्रयोग नहीं होता उस दिन चूल्हे की राख और पानी से ही होली मनाई जाती है। हर दिन होली के भक्तिमय गीत गाने से खड़ी होली की शुरूआत की जाती है जिसमें राम-सीता, शंकर-पार्वती, माँ काली और श्रीकृष्ण से संबन्धित गीत मुख्य रूप से गाये जाते हैं। जब होली गायकों की संख्या बढ़ जाती है तब श्रृंगार रस से भरी होलियों का गायन होता है। लगभग अन्त में हंसी- मजाक और छेड़छाड़ वाली उन्मुक्तता से भरी होलियां भी गाई जाती हैं। होली के आंगन में खड़ी होली का पहला दौर खत्म होते ही रात को किसी घर पर बैठकी होली के लिए जुटने का

V

कार्यक्रम बन चुका होता है। सामान्यतः रात में भी दो जगहों पर पुरूषों और महिलाओं की बैठक होली के साथ-साथ हो रही होती है। छलड़ी के दिन अन्त में नदी मे नहाकर और देवताओं का आशीर्वाद लेने के बाद होली की आशीष गाकर उत्सव की समाप्ति होती थी। लेकिन ढोल की थाप कई दिनों तक कानों में गूँजती रहती थी। इस तरह से समाज के हर तबके की सक्रिय सह-भागिता के कारण हमारी होली यादगार बन जाया करती थी।

पहाड़ की पारम्परिक होली का बहुत सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व है। यहाँ गायी जाने वाली होलियों में बृज भाषा की पहुंच कैसे हुई होगी, यह भी एक रोचक शोध का विषय है। बदलते हुए सामाजिक परिवेश में परम्परागत होली को बचाये रखना भी कठिन होता जा रहा है। पलायन, शराब और तकनीक के कारण आ रहे सामाजिक बदलाओं सहित कई अन्य कारणों पहाड़ की होली सिमटती जा रही है। वर्तमान समय में भी अनुभवी बुजुर्गों की अगुवायी मे नई पीढ़ी के लोग होली की अलख जगाकर रखने की कोशिश कर रहे हैं। ये बहुत संतोषजनक बात है। अपनी वैभवशाली सांस्कृतिक विरासत को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सही तरीका भी यही है।

- हेम पन्त
भड़कटिया

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

1–(शिव के मन माहि)

शिव के मन मांहि बसे काशी, शिव के मन हो ।

आधे काशी में वामन वनिया ।

आधा काशी सन्यासी, शिव के मन हो ।। शिव के मन0.....

काहे करन को वामन वनिया ।

काहे करन कोसन्यासी, शिव के मन हो ।। शिव के मन0.....

सेवा करन को वामन वनिया ।

पूजा करन को सन्यासी, शिव के मन हो ।। शिव के मन0.....

काहे को पूजे वामन वनिया ।

काहे को पूजे सन्यासी, शिव के मन हो ।। शिव के मन0.....

देवी को पूजे वामन वनिया ।

शिव को पूजे सन्यासी, शिव के मन हो ।। शिव के मन0.....

क्या इच्छा पूजे वामन वनिया ।

क्या इच्छा पूजे सन्यासी, शिव के मन हो ।। शिव के मन0.....

नव सिद्धि पूजे वामन वनिया ।

अष्ट सिद्धि को सन्यासी, शिव के मन हो ।। शिव के मन0....

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

2

2– तुम जै काली कल्याण करो ।

तुम जै काली कल्याण करो, तुम जै काली कल्याण करो–2

हरे–हरे पीपल द्वार विराजे ।

लाल ध्वजा फहराय रहो ।। तुम जै काली कल्याण करो ।।

शुम्भ निशुम्भ महा अभिमानी ।

इनके बल को गर्व हरो ।। तुम जै काली कल्याण करो ।।

अति बल मधु कैटभ सब मारे ।

रक्तबीज को वंश हरो ।। तुम जै काली कल्याण करो ।।

दानव मारे असुर सब मारे ।

देवन जै– जै कार करो ।। तुम जै काली कल्याण करो ।।

दास नारायण अरज करत है ।

निज भक्तन को कष्ट हरो ।। तुम जै काली कल्याण करो ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

3

3– गयी–गयी असुर तेरि ।

गयी–गयी असुर तेरि नारि मंदोदरी, सिया मिलन गई बागा में ।
थाली भर–भर भोजन ले गयी ।
गयी लंका की नार मंदोदरी ।। सिया मिलन गई बागा में ।।
गयी–गयी असुर तेरि नारि मंदोदरी, सिया मिलन गई बागा में ।
ले हो सीता भोजन पाओ ।
तुम लंका की नारि मंदोदरी ।। सिया मिलन गई बागा में ।।
गयी–गयी असुर तेरि नारि मंदोदरी, सिया मिलन गई बागा में ।
ना मैं तुम्हरो भोजन पाऊँ ।
ना लंका की नारि मंदोदरी ।। सिया मिलन गई बागा में ।।
गयी–गयी असुर तेरि नारि मंदोदरी, सिया मिलन गई बागा में ।
कौन राजा की बेटी कहावे ।
कौन राजा घर ब्याही मंदोदरी ।। सिया मिलन गई बागा में ।।
गयी–गयी असुर तेरि नारि मंदोदरी, सिया मिलन गई बागा में ।
जनक राजा की बेटी कहाऊँ ।
दशरथ राजा घर ब्याही मंदोदरी ।। सिया मिलन गई बागा में ।।
गयी–गयी असुर तेरि नारि मंदोदरी, सिया मिलन गई बागा में ।
कौन राजा की नारि कहावे ।
लंका के विधि आय मंदोदरी ।। सिया मिलन गई बागा में ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

4

गयी–गयी असुर तेरि नारि मंदोदरी, सिया मिलन गई बागा में ।
राम चन्द्र की नार कहाऊँ ।
रावण लंका लाय मंदोदरी ।। सिया मिलन गई बागा में ।।
गयी–गयी असुर तेरि नारि मंदोदरी, सिया मिलन गई बागा में ।
तुम तो सत् की सीता कहिए ।
अधम असुर घर आय मंदोदरी ।। सिया मिलन गई बागा में ।।
गयी–गयी असुर तेरि नारि मंदोदरी, सिया मिलन गई बागा में ।
मैं तो तो हुंगी सत् की सीता ।
होय असुर कुल नाश मंदोदरी ।। सिया मिलन गई बागा में ।।
गयी–गयी असुर तेरि नारि मंदोदरी, सिया मिलन गई बागा में ।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

4– जय बोलो यशोदा नन्दन की ।।

जय बोलो यशोदा नन्दन की, जय बोलो यशोदा नन्दन की–2

मोर मुकुट पीताम्बर सोहे ।

भाल विराजे चन्दन की ।। जय बोलो यशोदा नन्दन की–2

मधुर–मधुर स्वर बाजे मुरलिया ।

बाजत यशोदा नन्दन की ।। जय बोलो यशोदा नन्दन की–2

जमुना तट पर धेनु चरावे ।

हाथ लकुटिया नन्दन की ।। जय बोलो यशोदा नन्दन की–2

नाग कलिया के सर पर नाचे ।

बंशी बजी मन रंजन की ।। जय बोलो यशोदा नन्दन की–2

दुष्ट दलन कंसासुर मार्‌यो ।

रक्षा करी सब सन्तन की ।। जय बोलो यशोदा नन्दन की–2

नारद शेष–महेश विधाता ।

सुर–नर–मुनि के बन्दन की ।। जय बोलो यशोदा नन्दन की–2

जय बोलो यशोदा नन्दन की, जय बोलो यशोदा नन्दन की–2

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

6

5– सुनिरों सीता राम भया कोई ।

सुनिरो सीता राम भया कोई हीरा जनम ना पाओगे ।।2।।
इस कलयुग में दो ही बड़े हैं ।। एक बोल ।।
इक माता इक पिता भया कोई हीरा जनम नही पाओगे ।।
सुनिरो सीता राम भया कोई हीरा जनम ना पाओगे ।।2।।
इस कलयुग में दो ही बड़े हैं ।। एक बोल ।।
इक गंगा इक राम भया कोई हीरा जनम नही पाओगे ।।
सुनिरो सीता राम भया कोई हीरा जनम ना पाओगे ।।2।।
कुल तारण को गंगा बही है ।। एक बोल ।।
नाम जपन को राम भया कोई हीरा जनम नही पाओगे ।।
सुनिरो सीता राम भया कोई हीरा जनम ना पाओगे ।।2।।
इस कलयुग में दो ही बड़े हैं ।। एक बोल ।।
इक वामन इक गाय भया कोई हीरा जनम नही पाओगे ।।
सुनिरो सीता राम भया कोई हीरा जनम ना पाओगे ।।2।।
कुल तारण को गाय भयी है ।। एक बोल ।।
यज्ञ करन को वामन भया कोई हीरा जनम नही पाओगे ।।
सुनिरो सीता राम भया कोई हीरा जनम ना पाओगे ।।2।।
इस कलयुग में दो ही बड़े हैं ।। एक बोल ।।
इक सूरज इक चाँद भया कोई हीरा जनम नही पाओगे ।।
सुनिरो सीता राम भया कोई हीरा जनम ना पाओगे ।।2।।
ताप तपन को सूरज भया है ।। एक बोल ।।
शीतल करन को चाँद भया कोई हीरा जनम नही पाओगे।।
सुनिरो सीता राम भया कोई हीरा जनम ना पाओगे ।।2।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

7

6– दधि लूटे नन्द को लाल ।

दधि लूटे नन्द को लाल, बेचन ना जहियो –2

कहाँ के तुम ग्वाल गुजरिया । एक बोल ।।
काँ दधि बेचन जाय, बेचन ना जाहियो ।।
दधि लूटे नन्द को लाल, बेचन ना जहियो ।।
मथुरा के हम ग्वाल गुजरिया । एक बोल ।।
गोकुल बेचन जाय, बेचन ना जाहियो ।।
दधि लूटे नन्द को लाल, बेचन ना जहियो ।।
कौन राजा के ग्वाल गुजरिया । एक बोल ।।
कौन लला दधि खाय, बेचन ना जाहियो ।।
दधि लूटे नन्द को लाल, बेचन ना जहियो ।।
कंस राजा के ग्वाल गुजरिया । एक बोल ।।
कृ ण लला दधि खाय , बेचन ना जाहियो ।।
दधि लूटे नन्द को लाल, बेचन ना जहियो ।।
दूध पियो है नन्द को लाला । एक बोल ।।
माखन लेह चुराय, बेचन ना जाहियो ।।
दधि लूटे नन्द को लाल, बेचन ना जहियो ।।
दे दिनी खाई मटक दिनि फोड़ी । एक बोल ।।
माखन लेह लुटाय, बेचन ना जाहियो ।।
दधि लूटे नन्द को लाल, बेचन ना जहियो ।।

संग्रह कर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

8

7– गोरि प्यारो लगे तेरो झनकोरो ।

गोरि प्यारो लगे तेरो झनकारो । एक बोल ।।
झनकारो–झनकारो–झनकारो, गोरि प्यारो लगे तेरो झनकारो ।
तुम हो ब्रज की सुन्दर गोरी । एक बोल ।।
मैं मथुरा को मतवालो, गोरि प्यारो लगे तेरो झनकारो ।।
झनकारो–झनकारो–झनकारो, गोरि प्यारो लगे तेरो झनकारो ।
चूनर चादर सब ही रँगे हैं । एक बोल ।।
फागुन ऐसो मतवालो, गोरि प्यारो लगे तेरो झनकारो ।।
झनकारो–झनकारो–झनकारो, गोरि प्यारो लगे तेरो झनकारो ।
सब सखियाँ मिल खेल रही हैं । एक बोल ।।
दिलवर को दिल है न्यारो, गोरि प्यारो लगे तेरो झनकारो ।।
झनकारो–झनकारो–झनकारो, गोरि प्यारो लगे तेरो झनकारो ।
ब्रज मण्डल सब धूम मची है । एक बोल ।।
खेलत सखियाँ सब मारो, गोरि प्यारो लगे तेरो झनकारो ।।
झनकारो–झनकारो–झनकारो, गोरि प्यारो लगे तेरो झनकारो ।
लपटि–झपटि कर बय्याँ मरोरे । एक बोल ।।
मारे मोहन पिचकारी, गोरि प्यारो लगे तेरो झनकारो ।।
झनकारो–झनकारो–झनकारो, गोरि प्यारो लगे तेरो झनकारो ।
घूँघट खोल गुलाल मलत है । एक बोल ।।
वंज करे यो वंजारो, गोरि प्यारो लगे तेरो झनकारो ।।
झनकारो–झनकारो–झनकारो, गोरि प्यारो लगे तेरो झनकारो ।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

9

8– भलो–भलो जनम लियो ।

भलो–भलो जनम लियो याम राधिका, भलो जनम लियो मथुरा में–2
भर भादो की रतिया में, रे भर भादो की रतिया में ।
कृ ण लियो अवतार राधिका, भलो जनम लियो मथुरा में ।।
भलो–भलो जनम लियो याम राधिका, भलो जनम लियो मथुरा में–2
रोहणि नक्षत्र जनम लियो है । एक बोल ।।
जनम लिया बुधवार राधिका, भलो जनम लियो मथुरा में ।।
भलो–भलो जनम लियो याम राधिका, भलो जनम लियो मथुरा में–2
हाथन की हथगड़ी खुली , हाथन की हथगड़ी खुली ।
खुल गये वरज किवाड़ राधिका, भलो जनम लियो मथुरा में ।।
भलो–भलो जनम लियो याम राधिका, भलो जनम लियो मथुरा में–2
ले बालक वसुदेव चले हैं । एक बोल ।।
पहुँचे नन्द के द्वार राधिका, भलो जनम लियो मथुरा में ।।
भलो–भलो जनम लियो याम राधिका, भलो जनम लियो मथुरा में–2
जब ये बालक गोकुल पहुँचा । एक बोल ।।
हो रही जय जय कार राधिका, भलो जनम लियो मथुरा में ।।
भलो–भलो जनम लियो याम राधिका, भलो जनम लियो मथुरा में–2

10

देवकी कोख में जनम लियो है । एक बोल ।।
यशोदा कोख खिलाय राधिका, भलो जनम लियो मथुरा में ।।
भलो–भलो जनम लियो याम राधिका, भलो जनम लियो मथुरा में–2
वासुदेव बंदी पड़े, वासुदेव बंदी पड़े ।
कंस राजा दरबार राधिका, भलो जनम लियो मथुरा में ।।
भलो–भलो जनम लियो याम राधिका, भलो जनम लियो मथुरा में–2
आगे यमुना उमड़ रही, आगे यमुना उमड़ रही ।
पीछे सीह हि डराये राधिका, भलो जनम लियो मथुरा में ।।
भलो–भलो जनम लियो याम राधिका, भलो जनम लियो मथुरा में–2

9– गोरि के वदन पर ।

गोरि–गोरि के वदन पर तिल राजे । एक बोल ।।
तिल राजे भाई तिल छाजे, गोरि–गोरि के वदन पर तिल राजे ।
स्योड़ि तुम्हारी अजब बनी है । एक बोल ।।
चमके डडिया सिर छाजे, गोरि–गोरि के वदन पर तिल राजे
तिल राजे भाई तिल छाजे, गोरि–गोरि के वदन पर तिल राजे ।
कपालि तुम्हारी अजब बनी है । एक बोल ।।
विंदिया लगा के गोरि छाजे, गोरि–गोरि के वदन पर तिल राजे
तिल राजे भाई तिल छाजे, गोरि–गोरि के वदन पर तिल राजे ।
आँखियां तुम्हारी अजब बनी है । एक बोल ।।
कजरा लगा के गोरि छाजे, गोरि–गोरि के वदन पर तिल राजे
तिल राजे भाई तिल छाजे, गोरि–गोरि के वदन पर तिल राजे ।
होठ तुम्हारे अजब बने है । एक बोल ।।
लालि लगा के गोरि छाजे, गोरि–गोरि के वदन पर तिल राजे
तिल राजे भाई तिल छाजे, गोरि–गोरि के वदन पर तिल राजे ।
छतिया तुम्हारी अजब बनी है । एक बोल ।।
पहने अंगिया गोरि छाजे, गोरि–गोरि के वदन पर तिल राजे
तिल राजे भाई तिल छाजे, गोरि–गोरि के वदन पर तिल राजे ।
कमर तुम्हारी अजब बनी है । एक बोल ।।
चमके लहंगा दिल लागे, गोरि–गोरि के वदन पर तिल राजे
तिल राजे भाई तिल छाजे, गोरि–गोरि के वदन पर तिल राजे ।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

10– संय्या निरमोहिया कब आलो ।

ठाड़ी जो देखे वाट मेरो संय्या निरमोहिया कब आलो ।
चल सात समुन्दर पार मेरो संय्या निरमोहिया कब आलो ।।
सात बरस की व्याही गयी, सात बरस की ब्याही गयी
अफ त गयो परदेश मेरो संय्या निरमोहिया कब आलो ।।
ठाड़ी जो देखे वाट मेरो संय्या निरमोहिया कब आलो ।
सोल बरस की ज्वान भयूँ , सोल बरस की ज्वान भयूँ ।
योवन भयो भरपूर मेरो संय्या निरमोहिया कब आलो ।।
ठाड़ी जो देखे वाट मेरो संय्या निरमोहिया कब आलो ।
कौन जो पंडित पाती लेखे । एक बोल ।।
कौन चलावे डाक मेरो संय्या निरमोहिया कब आलो ।।
ठाड़ी जो देखे वाट मेरो संय्या निरमोहिया कब आलो ।
पूरब बादल उनान, पूरब बादल उनान ।
पश्चिम भयो घनघोर मेरो संय्या निरमोहिया कब आलो ।।
ठाड़ी जो देखे वाट मेरो संय्या निरमोहिया कब आलो ।
उत जन बरसे मेघला उत जन वरसे मेघला ।
उत ही पिया परदेश मेरो संय्या निरमोहिया कब आलो ।।
ठाड़ी जो देखे वाट मेरो संय्या निरमोहिया कब आलो ।
चल सात समुन्दर पार मेरो संय्या निरमोहिया कब आलो ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

13

11– मथुरा में खेले एक घड़ी ।

मथुरा में खेले एक घड़ी, मथुरा में खेलें एक घड़ी । दो बोल ।।

काहे के हाथ में डमरू विराजै ।

काहे के हाथ में लाल छड़ी ।। मथुरा में खेलें एक घड़ी ।।

राधा के हाथ में डमरू विराजै ।

कृ ण के हाथ में लाल छड़ी ।। मथुरा में खेलें एक घड़ी ।।

काहे के सिर पर मुकुट विराजै ।

काहे के सिर पर है पगड़ी ।। मथुरा में खेलें एक घड़ी ।।

राधा के सिर पर मुकुट विराजै ।

कृ ण के सिर पर है पगड़ी ।। मथुरा में खेलें एक घड़ी ।।

काहे के कान में कुण्डल सोहे ।

काहे के सर मोती की लड़ी ।। मथुरा में खेलें एक घड़ी ।।

राधा के कानन कुण्डल ।

कृ ण के सर मोती की लड़ी ।। मथुरा में खेलें एक घड़ी ।।

काहे के हाथ मजिरा सोहे ।

काहे के हाथ में ताल खड़ी ।। मथुरा में खेलें एक घड़ी ।।

राधा के हाथ मजिरा सोहे ।

कृ ण के हाथ में ताल खड़ी ।। मथुरा में खेलें एक घड़ी ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

12– कान्हा बजा गयो वांसुरिया ।

नदि यमुना के तीर कदम्ब चढ़ि कान्हा बजा गयो वांसुरिया ।। 2 ।।
काहे की तेरि वांसुरि कन्हैया वांसुरिया सुन कन्हैया ।
काहे को तेरो बीन कदम्ब चढ़ि कान्हा बजा गयो वाँसुरिया ।।
नदि यमुना के तीर कदम्ब चढ़ि कान्हा बजा गयो वांसुरिया ।।
हरिया बांस की वांसुरि कन्हैया वांसुरिया सुन कन्हैया ।
सोने को तेरो बीन कदम्ब चढ़ि कान्हा बजा गयो वाँसुरिया ।।
नदि यमुना के तीर कदम्ब चढ़ि कान्हा बजा गयो वांसुरिया ।।
कै सुर बाजे वांसुरि कन्हैया वांसुरिया सुन कन्हैया ।
कै सुर को तेरो बीन कदम्ब चढ़ि कान्हा बजा गयो वाँसुरिया ।।
नदि यमुना के तीर कदम्ब चढ़ि कान्हा बजा गयो वांसुरिया ।।
छः सुर बाजे वांसुरि कन्हैया वांसुरिया सुन कन्हैया ।
नौ सुर को तेरो बीन कदम्ब चढ़ि कान्हा बजा गयो वाँसुरिया ।।
नदि यमुना के तीर कदम्ब चढ़ि कान्हा बजा गयो वांसुरिया ।।
कै मोल की तेरि वांसुरि कन्हैया वांसुरिया सुन कन्हैया ।
कै मोल की तेरी बीन कदम्ब चढ़ि कान्हा बजा गयो वाँसुरिया ।।
नदि यमुना के तीर कदम्ब चढ़ि कान्हा बजा गयो वांसुरिया ।।
सौ मोल की तेरि वांसुरि कन्हैया वांसुरिया सुन कन्हैया ।
अनमोल की मेरि बीन कदम्ब चढ़ि कान्हा बजा गयो वाँसुरिया ।।
नदि यमुना के तीर कदम्ब चढ़ि कान्हा बजा गयो वांसुरिया ।।
कौन बजावे वांसुरि कन्हैया वांसुरिया सुन कन्हैया ।
कौन बजावे बीन कदम्ब चढ़ि कान्हा बजा गयो वाँसुरिया ।।
नदि यमुना के तीर कदम्ब चढ़ि कान्हा बजा गयो वांसुरिया ।।
कृ ण बजावे वांसुरि कन्हैया वांसुरिया सुन कन्हैया ।
राधा बजावे बीन कदम्ब चढ़ि कान्हा बजा गयो वाँसुरिया ।।
नदि यमुना के तीर कदम्ब चढ़ि कान्हा बजा गयो वांसुरिया ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

13– नैना तुम्हारे रसा भरे ।

15

अछ हाँ रे गोरी नैना तुम्हारे रसा भरे ।
लपकि–झपकि रस खाय गोरी नैना तुम्हारे रसा भरे ।।
कहो तो यहीं रम जाए गोरी नैना तुम्हारे रसा भरे ।।
अछै हाँ रे गोरी तुम स्योणी बन जाओगी ।
हम हंडिया बन जाएं गोरी बैठ तुम्हारी स्योणिन में ।।
लपकि–झपकि रस खाय गोरी नैना तुम्हारे रसा भरे ।।
अछै हाँ रे गोरी तुम कपलि बन जाओगी ।
हम विन्दिया बन जाएं गोरी बैठ तुम्हारी कपलिन में ।।
लपकि–झपकि रस खाय गोरी नैना तुम्हारे रसा भरे ।।
अछै हाँ रे गोरी तुम अँखिया बन जाओगी ।
हम कजरा बन जाएं गोरी बैठ तुम्हारी अँखियन में ।।
लपकि–झपकि रस खाय गोरी नैना तुम्हारे रसा भरे ।।
अछै हाँ रे गोरी तुम नकिया बन जाओगी ।
हम नथिया बन जाएं गोरी बैठ तुम्हारी नकियन में ।।
लपकि–झपकि रस खाय गोरी नैना तुम्हारे रसा भरे ।।
अछै हाँ रे गोरी तुम दतिया बन जाओगी ।
हम मिशिया बन जाएं गोरी बैठ तुम्हारी दतियन में ।।
लपकि–झपकि रस खाय गोरी नैना तुम्हारे रसा भरे ।।
अछै हाँ रे गोरी तुम छतिया बन जाओगी ।
हम अंगिया बन जाएं गोरी बैठ तुम्हारी छतियन में ।।
लपकि–झपकि रस खाय गोरी नैना तुम्हारे रसा भरे ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

14– जल कैसे भरूं जमुना गहरी ।

जल कैसे भरूं जमुना गहरी ।। एक बोल ।।

जल कैसे भरूं जमुना गहरी ।। दो बोल ।।

ठाड़ी भरूं राजा राम जी देखे ।

बैठि भरूं भीगे चुनरी ।। जल कैसे भरूं जमुना गहरी ।।

धीरे चलूँ घर सास बुरी है ।

धमकि चलूँ छलके गगरी ।। जल कैसे भरूं जमुना गहरी ।।

गोदि में बालक सिर पर गागर ।

परवत से उतरे गोरी ।। जल कैसे भरूं जमुना गहरी ।।

'जल कैसे भरूं जमुना गहरी ।।"

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

17

15– विरहन तेरी मुरली ।

विरहन तेरी मुरली घनघोरा ।। एक बोल ।।

घनघोरा–घनघोरा–घनघोरा विरहन तेरी मुरली घनघोरा ।।

काहिले पाल्यो हरे – परेवा ।

काहिले पाल्यो यो मोरा ।। विरहन तेरी मुरली घनघोरा ।।

राजा ले पाल्यो हरे – परेवा ।

रानी ले पाल्यो यो मोरा ।। विरहन तेरी मुरली घनघोरा ।।

कहाँ बसत हैं हरे – परेवा ।

कहाँ बसत हैं यो मोरा ।। विरहन तेरी मुरली घनघोरा ।।

जंगल बसत हैं हरे – परेवा ।

महल बसत हैं यो मोरा ।। विरहन तेरी मुरली घनघोरा ।।

कहाँ चुगत हैं हरे – परेवा ।

कहाँ चुगत हैं यो मोरा ।। विरहन तेरी मुरली घनघोरा ।।

दाना चुगत हैं हरे – परेवा ।

जंगल चुगत हैं यो मोरा ।। विरहन तेरी मुरली घनघोरा ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

18

16– ब्रज मंडल देश दिखाओ रसिया ।

ब्रज मंडल देश दिखाओं रसिया ब्रज मंडल हो ।

तेरे विरज में गाय बहुत हैं ।

पी–पी दूध बनै बछिया ब्रज मंडल हो ।।

ब्रज मंडल देश दिखाओं रसिया ब्रज मंडल हो ।

तेरे विरज में धान बहुत हैं ।

फटके नारि कुटे रसिया ब्रज मंडल हो ।।

ब्रज मंडल देश दिखाओं रसिया ब्रज मंडल हो ।

तेरे विरज में गीत बहुत हैं ।

गाये नारि सुनै रसिया ब्रज मंडल हो ।।

ब्रज मंडल देश दिखाओं रसिया ब्रज मंडल हो ।

तेरे विरज में मोर बहुत हैं ।

कुकत मोर फटै छतिया ब्रज मंडल हो ।।

ब्रज मंडल देश दिखाओं रसिया ब्रज मंडल हो ।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

17– मत बोलो सजन मैं विखर जाउंगी ।

मत बोलो सजन मैं विखर जाउंगी ।। एक बोल ।।

मत बोले सजन मैं विखर जाउंगी ।। दो बोल ।।

मेरे पिछवाड़े बाग बहुत हैं ।

कोयल बन के उड़ जाउंगी ।। मत बोलो सजन ..... ।।

मेरे पिछवाड़े गंगा बहत हैं ।

मछली बन के छिप जाउंगी ।। मत बोलो सजन ..... ।।

मेरे पिछवाड़े महल बहुत हैं ।

रानी बन के रह जाउंगी ।। मत बोलो सजन ..... ।।

मेरे पिछवाड़े साधु बहुत हैं ।

जोगन बन के रम् जाउंगी ।। मत बोलो सजन ..... ।।

मेरे पिछवाड़े फूल बहुत हैं ।

भौंरा बन के उड़ जाउंगी ।। मत बोलो सजन ..... ।।

मेरे पिछवाड़े हाट बहुत हैं ।

सौदा बन के बिक् जाउंगी ।। मत बोलो सजन ..... ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

18– मत जाओ पिया होलि आय रही ।

मत जाओ पिया होली आय रही । एक बोल ।।

होली आय रही होली आय रही ।। मत जाओ पिया.....

जिनके पिया नित घर ही बसत हैं ।

उनकी नारी रंग भरै ।। मत जाओ पिया.....

जिनके पिया परदेश बसत हैं ।

उनकी नारी सोच भरी ।। मत जाओ पिया.....

चातक मोर पपीहा बोले।

कोयल बोल सुनाय रही ।। मत जाओ पिया.....

उड़त गुलाल लाल भए बादल ।

ऐसी नई तु आय रही । मत जाओ पिया.....

पय्यां पड़त हूँ अरज करत हूँ ।

बाँह पकड़ समझाय रही ।। मत जाओ पिया.....

होली आय रही होली आय रही ।। मत जाओ पिया.....

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

19– हरि धरें भुकुट खेलें होली ।

हरि धरें मुकुट खेलें होली हरि धरें मुकुट खेले होली ।

कौन समय सीता होली खेले ।

कौन समय राधा गोरी ।। हरि धरें मुकुट खेलें होली ।।

त्रेता में सीता होली खेले ।

द्वापर में राधा गोरी ।। हरि धरें मुकुट खेलें होली ।।

कौन पहर सीता होली खेले ।

कौन पहर राधा गोरी ।। हरि धरें मुकुट खेलें होली ।।

चीर पहन सीता होली खेले ।

वाटम्बर में राधा गोरी ।। हरि धरें मुकुट खेलें होली ।।

कितने बरस के कुंवर कन्हैया ।

कितने बरस राधा गोरी ।। हरि धरें मुकुट खेलें होली ।।

बारह बरस के कुंवर कन्हैया ।

सात बरस राधा गोरी ।। हरि धरें मुकुट खेलें होली ।।

कौन वरण के कुंवर कन्हैया ।

कौन वरण राधा गोरी ।। हरि धरें मुकुट खेलें होली ।।

याम वरण के कुंवर कन्हैया ।

वेत वरण राधा गोरी ।। हरि धरें मुकुट खेलें होली ।।

22

20– सो सुनिरो सीता राम ।

सो सुमिरो सीता राम, राम भज राम भज राधे ।। 1 ।।

हरि भज ले सीता राम, राम भज राम भज राधे ।। सो० ।।

कौन दिशा गढ़ लंका है रे, कौन दिशा कैलाश, कौन दिशा अयोध्या,

अयोध्या में जन्मे राम ।। राम भज राम भज राधे ।।

दक्षिण दिशा गढ़ लंका है रे, उत्तर दिशा कैलाश,

पूरब दिशा अयोध्या,अयोध्या में ठाड़े राम ।।राम भज राम भज राधे

काहे की गढ़ लंका है रे, काहे को कैलाश, काहे की अयोध्या,

अयोध्या में ठाड़े राम ।। राम भज राम भज राधे ।।

सोने की गढ़ लंका है रे, पाथर को कैलाश, कानन की अयोध्या,

अयोध्या में ठाड़े राम ।। राम भज राम भज राधे ।।

कौन बसे गढ़ लंका है रे, कौन बसे कैलाश, कौन बसे अयोध्या,

अयोध्या में ठाड़े राम ।। राम भज राम भज राधे ।।

रावण की गढ़ लंका है रे, शिवजी बसे कैलाश, राम बसे अयोध्या,

अयोध्या में ठाड़े राम ।। राम भज राम भज राधे ।।

एक जो पेड़ मथुरा में उपजो जड़ जाये जगनाथ, फूल फुले द्वारिका

फल लागे बदरीनाथ ।। राम भज राम भज राधे ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

21– जल बिन मछली तड़फ तड़फ ।

जल बिना मछली तड़फ–तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।
जल बिना मछली तड़फ–तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
दशरथ राजा बांस काटन गये । एक बोल ।।
अंगूठा लागि फांस तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
जल बिना मछली तड़फ–तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
जो मेरी पीड़ा दूर करेगी । एक बोल ।।
दे दूँ सारा राज तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
जल बिना मछली तड़फ–तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
राजा दशरथ की तीनों रनियां । एक बोल ।।
तीनों पहरा देय तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
जल बिना मछली तड़फ–तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
पहलो पहरा रानी कौशल्या । एक बोल ।।
राजा चैन न होय तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
जल बिना मछली तड़फ–तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
दूसरो पहरा रानी सुमित्रा । एक बोल ।।
राजा नींद न होय तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
जल बिना मछली तड़फ–तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
तिसरो पहरा रानी कैकई को । एक बोल ।।
राजा घुरि–घुरि सोई तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
जल बिना मछली तड़फ–तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

मांग ले रानी जो वर मांगे । एक बोल ।।
जो मन इच्छा होय तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
जल बिना मछली तड़फ–तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
जो मैं मांगू तुम ना दोगे । एक बोल ।।
वचन अकारथ जाय तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
जल बिना मछली तड़फ–तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
दूंगा वही जो मांगे रानी । एक बोल ।।
कसम राम की खाय तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
जल बिना मछली तड़फ–तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
राम लछिमन वास दियो है । एक बोल ।।
भरत ही दीन्हो राज तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
जल बिना मछली तड़फ–तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
राम लछिमन वन को चले हैं । एक बोल ।।
सीता लागी साथ तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
जल बिना मछली तड़फ–तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
दशरथ राजा स्वर्ग सिधारे । एक बोल ।।
कैकई मन मुस्काय तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।
जल बिना मछली तड़फ–तड़फ मैं कैसे रहूँ रघुनाथ बिना ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

22– तेरो पतलो कमर ।

तेरो पतलो कमर लम्बा केश सुघड़ जल भरन गयी पनघट पर हो ।
काहे को तेरो हीरा – मुनड़ी । दो बोल ।।
काहे को तेरो बीन सुघड़ जल भरन गयी पनघट पर हो ।।
तेरो पतलो कमर लम्बा केश सुघड़ जल भरन गयी पनघट पर हो ।
सोने की तेरी हीरा – मुनड़ी । दो बोल ।।
मोतियन को मेरो हार सुघड़ जल भरन गयी पनघट पर हो ।।
तेरो पतलो कमर लम्बा केश सुघड़ जल भरन गयी पनघट पर हो ।
काहे की तेरी वांसुरी । दो बोल ।।
काहे को तेरो बीन सुघड़ जल भरन गयी पनघट पर हो ।।
तेरो पतलो कमर लम्बा केश सुघड़ जल भरन गयी पनघट पर हो ।
सोने की तेरी वांसुरी । दो बोल ।।
लोहे को तेरो बीन सुघड़ जल भरन गयी पनघट पर हो ।।
तेरो पतलो कमर लम्बा केश सुघड़ जल भरन गयी पनघट पर हो ।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

26

23– भौजाई को देवर चुड़ियालो ।

भोजाई को देवर चुड़ियालो । एक बोल ।।

चुड़ियालो मेरो पतियालो, भोजाई को देवर चुड़ियालो ।।

स्योणि तुम्हारी अजब बनी है ।

फिर डडिया के लगा लगो, भोजाई को देवर चुड़ियालो ।

चुड़ियालो मेरो पतियालो, भोजाई को देवर चुड़ियालो ।।

स्योणि अंखियां तुम्हारी अजब बनी है ।

फिर कजरा के लगा लगो, भोजाई को देवर चुड़ियालो ।

चुड़ियालो मेरो पतियालो, भोजाई को देवर चुड़ियालो ।।

नकिया तुम्हारी अजब बनी है ।

फिर नथिया के लगा लगो, भोजाई को देवर चुड़ियालो ।

चुड़ियालो मेरो पतियालो, भोजाई को देवर चुड़ियालो ।।

छतिया तुम्हारी अजब बनी है ।

फिर अंगिया के लगा लगो, भोजाई को देवर चुड़ियालो ।

चुड़ियालो मेरो पतियालो, भोजाई को देवर चुड़ियालो ।।

कमर तुम्हारी अजब बनी है ।

फिर लहंगा के लगा लगो, भोजाई को देवर चुड़ियालो ।

चुड़ियालो मेरो पतियालो, भोजाई को देवर चुड़ियालो ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

24– होली खेलत हैं कैलाश पति ।

होलि खेलत हैं कैलाश पति होलि खेलत हैं ।।

शिव की जटा में गंगा विराजे ।

गंगा लाए भगीरथी होलि खेलत हो। होलि खेलत हैं .....

बूढ़े नदिया शिवजी विराजे ।

संग में लाये पारवती होलि खेलत हो। होलि खेलत हैं .....

हाथ त्रिशूल गले रूद्रमाला ।

खाक रमाये लाखपति होलि खेलत हो। होलि खेलत हैं .....

भारी दान दियो शिव ंकर ।

भस्मासुर चाहे पारवती होलि खेलत हो। होलि खेलत हैं .....

तीनों लोक फिरे शिव ंकर ।

कहिं न मिले त्रिलोकपती होलि खेलत हो। होलि खेलत हैं ....

ध्यान करो जब शिव ंकर को ।

नाचन लागे कैलाश पति होलि खेलत हो। होलि खेलत हैं .....

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

28

25– रंग चगीलो देवर घर आरोछ ।

रंग चंगीलो देवर घर आरोछ । एक बोल ।।
रंग चंगीलो देवर घर आरोछ ।। दो बोल ।।
सासु खिन लड्डू ननद खिन पेड़ा ।
मैं खिन वर्फी लारोछ ।। रंग चंगीलो देवर घर आरोछ ।।
सासु खिन नथिया ननद खिन कुण्डल ।
मैं खिन माला लारोछ ।। रंग चंगीलो देवर घर आरोछ ।।
सासु खिन बिन्दी ननद खिन पोडर ।
मैं खिन लाली लारोछ ।। रंग चंगीलो देवर घर आरोछ ।।
सासु खिन लहंगा ननद खिन चुनरी ।
मैं खिन अंगिया लारोछ ।। रंग चंगीलो देवर घर आरोछ ।।
छम–छम छम–छम घुंगरू लारोछ ।
नानो– नानो देवर आरोछ ।। रंग चंगीलो देवर घर आरोछ ।।
सासु खिन धोति ननद खिन झम्पर ।
मैं खिन साड़ी लारोछ ।। रंग चंगीलो देवर घर आरोछ ।।

संग्रहकर्ता विपिन चन्द्र जोशी

संग्रहकर्ता विपिन चन्द्र जोशी

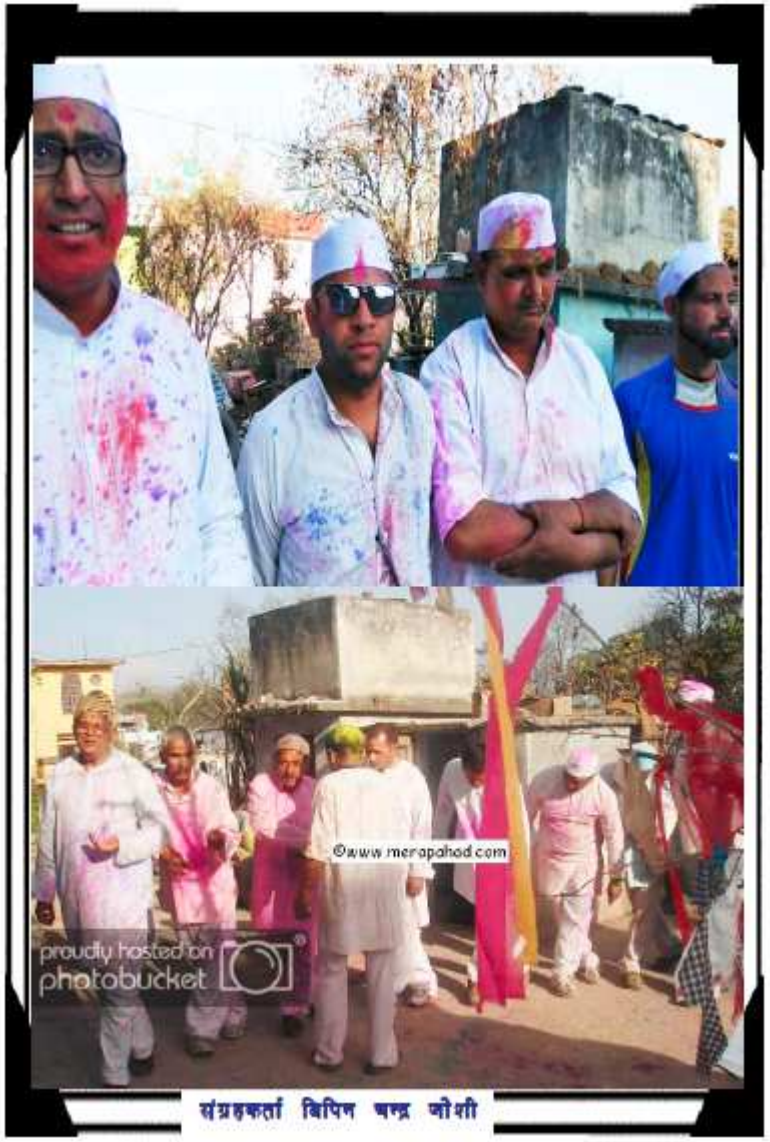

26– तेरे नैन रसीले यार बालम ।

तेरे नैन रसीले यार बालम प्रीत लगा ले नैनन से ।
अछै हाँ रे बालम मस्त महिना फागुन को ।
खेलत होलि धुमार बालम प्रीत लगा ले नैनन से ।।
तेरे नैन रसीले यार बालम प्रीत लगा ले नैनन से ।
अछै हाँ रे बालम वन–वन फूले टेसुवा ।
लागत जी को सुहाय बालम प्रीत लगा ले नैनन से ।।
तेरे नैन रसीले यार बालम प्रीत लगा ले नैनन से ।
अछै हाँ रे बालम कोयल बोले वन–वन में ।
मीठे ाब्द सुहाय बालम प्रीत लगा ले नैनन से ।।
तेरे नैन रसीले यार बालम प्रीत लगा ले नैनन से ।
अछै हाँ रे बालम मोर जो बोले वन–वन में ।
नाचत मन में लजाय बालम प्रीत लगा ले नैनन से ।।
तेरे नैन रसीले यार बालम प्रीत लगा ले नैनन से ।
अछै हाँ रे बालम ऐसो डडिया ला दीजो।
जो मेरी स्योणि सुहाय बालम प्रीत लगा ले नैनन से ।।
तेरे नैन रसीले यार बालम प्रीत लगा ले नैनन से ।
अछै हाँ रे बालम ऐसो विंदिया ला दीजो।
जो मेरी कपलिन सुहाय बालम प्रीत लगा ले नैनन से ।।
तेरे नैन रसीले यार बालम प्रीत लगा ले नैनन से ।
अछै हाँ रे बालम ऐसो अंगिया ला दीजो।
जो मेरी छतिया सुहाय बालम प्रीत लगा ले नैनन से ।।
तेरे नैन रसीले यार बालम प्रीत लगा ले नैनन से ।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

27– बलमा घर आये फागुन में ।

30

बलमा घर आये फागुन में ।। एक बोल ।।
जबसे पिया परदेश सिधारे ।
आम लगाये बागन में ।। बलमा घर आये फागुन में ।।
चैत मास में वन फल पाके ।
आम जो पाके सावन में ।। बलमा घर आये फागुन में ।।
गऊ को गोवर अंगना लिपायो ।
मोतियन चौक पुरावन में ।। बलमा घर आये फागुन में ।।
आये पिया मैं ह ि भई हूँ ।
मंगल साज सजावन में ।। बलमा घर आये फागुन में ।।
भोजन पान बनाये मन से ।
लड्डू पेड़ा लावन में ।। बलमा घर आये फागुन में ।।
पिय से अरज करूँ दिन राती ।
बय्यां पकड़ समझावन में ।। बलमा घर आये फागुन में ।।
अबके पिया मोसे होलि खेलो ।
रंग–रंगीले फागुन में ।। बलमा घर आये फागुन में ।।
अबके पिया तुम खेल लो होली ।
क्यों परदेश सिधावन में ।। बलमा घर आये फागुन में ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

31

28– सीता वन में अकेली कैसे रही ।

अछ हाँ रे सीता वन में अकेली कैसे रही ।
कैसे रही दिन–रात ।। सीता वन में अकेली कैसे रही ।
राम जी रोके, कौशल्या रोके ।
नहिं छोड़ा पति साथ ।। सीता वन में ०
पतिव्रता को धरम विचारे ।
छोड़ा राजसि भोग ।। सीता वन में ०
भालू कपिन को देख के डरती ।
अब रहती उन साथ ।। सीता वन में ०
पलंग अटारन छोड़ के सीता ।
कुशहि में सेज लगाय ।। सीता वन में ०
सोलह श्रृंगार बत्तीस आभू ाण ।
भाठरस भोजन त्याग ।। सीता वन में ०
आय विपती ने होरी सीता ।
राम चले आखेट ।। सीता वन में ०
मर्म बचन लक्ष्मण से बोली ।
रावण हर ले जाय ।। सीता वन में ०

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

29– शिव दरसन दे दो जटाधारी ।

शिव दरसन दे दो जटाधारी शिव दरसन हो ।
शिव दरसन दे दो जटाधारी शिव दरसन हो ।।
पूरब दिशा से आतुर आये ।
नगर निशाने संग लाये ।। शिव दरसन o ।।
पश्चिम दिशा से आतुर आये ।
अक्षत चन्दन संग लाये ।। शिव दरसन o ।।
उत्तर दिशा से आतुर आये ।
अबीर गुलाला संग लाये ।। शिव दरसन o ।।
दक्षिण दिशा से आतुर आये ।
होली की बहारा संग लाये ।। शिव दरसन o ।।

संग्रहकर्ता विपिन चन्द्र जोशी

30– तुम तो भई तपवान कालिका ।

तुम तो भई तपवान कालिका कलयुग में अवतार भई ।
हरे–हरे पीपल द्वार विराजे ।
लाल ध्वजा फहराय कालिका कलयुग में अवतार भई ।।
तुम तो भई तपवान कालिका कलयुग में अवतार भई ।।
काहे को अक्षत काहे की पाती ।
काहे को भेंट चढ़ाय कालिका कलयुग में अवतार भई ।।
तुम तो भई तपवान कालिका कलयुग में अवतार भई ।।
ाालिं को अक्षत बेल की पाती ।
गोकुल धूप चढ़ाय कालिका कलयुग में अवतार भई ।।
तुम तो भई तपवान कालिका कलयुग में अवतार भई ।।
काहे को मन्दिर काहे को छत्तर ।
काहे को कलश चढ़ाय कालिका कलयुग में अवतार भई ।।
तुम तो भई तपवान कालिका कलयुग में अवतार भई ।।
चांदि को मन्दिर सोने को छत्तर ।
मोतियन कलश चढ़ाय कालिका कलयुग में अवतार भई ।।
तुम तो भई तपवान कालिका कलयुग में अवतार भई ।।
तू जननी जग पालन कर्ता ।
सब भक्तों की मात कालिका कलयुग में अवतार भई ।।
तुम तो भई तपवान कालिका कलयुग में अवतार भई ।।
दास नारायण आस चरण की ।
तुम मेरी मन मान कालिका कलयुग में अवतार भई ।।
तुम तो भई तपवान कालिका कलयुग में अवतार भई ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

31– हमरो देवर नादान ।

हमरो देवर नादान प्रेम की बात ना समझे ।

हमने देवर को स्योणि दिखाई ।
पूछे डडिया दाम प्रेम की बात ना समझे ।।
हमरो देवर नादान प्रेम की बात ना समझे ।।

हमने देवर को कपलि दिखाई ।
पूछे विंदिया दाम प्रेम की बात ना समझे ।।
हमरो देवर नादान प्रेम की बात ना समझे ।।

हमने देवर को अंखिया दिखाई ।
पूछे कजरा दाम प्रेम की बात ना समझे ।।
हमरो देवर नादान प्रेम की बात ना समझे ।।

हमने देवर को होठ दिखाये ।
पूछे लाली दाम प्रेम की बात ना समझे ।।
हमरो देवर नादान प्रेम की बात ना समझे ।।

हमने देवर को छतिया दिखाई ।
पूछे अंगिया दाम प्रेम की बात ना समझे ।।
हमरो देवर नादान प्रेम की बात ना समझे ।।

हमने देवर को पैर दिखाये ।
पूछे पायल दाम प्रेम की बात ना समझे ।।
हमरो देवर नादान प्रेम की बात ना समझे ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

35

32– करले अपना व्याह देवर ।

करले अपनो व्याह देवर हमोरो भरोसो जन करिये ।

झन करिये एतवार देवर हमोरो भरोसो जन करिये ।।

अछ हाँ रे देवर हम जो बुलायें मंगल को ।

तुम आये बुधवार देवर हमोरो भरोसो जन करिये ।।

करले अपनो व्याह देवर हमोरो भरोसो जन करिये ।।

अछे हाँ रे देवर हम जो बुलायें अकेले में ।

तुम लाए संग चार देवर हमोरो भरोसो जन करिये ।।

करले अपनो व्याह देवर हमोरो भरोसो जन करिये ।।

अछे हाँ रे देवर हम जो बुलायें बागा में ।

तुम आये घर बार देवर हमोरो भरोसो जन करिये ।।

करले अपनो व्याह देवर हमोरो भरोसो जन करिये ।।

अछे हाँ रे देवर हम जो बुलायें सन्ध्या में ।

तुम आये आधी रात देवर हमोरो भरोसो जन करिये ।।

करले अपनो व्याह देवर हमोरो भरोसो जन करिये ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

33– ओ झुकि ओ मोरे यार ।

ओ झुकि ओ मोरे यार जालिम नैना तेरे ।
नैना बने मिसरी के कुंजे, झुकि–झुकि मरत गंवार
जालिम नैना तोरे ।। ओ झुकि ओ मोरे यार० ।।
कौन दिशा से बिजली आयी, कौन दिशा रमिजाय
जालिम नैना तोरे ।। ओ झुकि ओ मोरे यार० ।।
पूरब दिशा से बिजली आयी, पश्चिम दिशा रमिजाय
जालिम नैना तोरे ।। ओ झुकि ओ मोरे यार० ।।
इस बिजली में क्या–क्या है रे, तबला सरंगी सितार
जालिम नैना तोरे ।। ओ झुकि ओ मोरे यार० ।।
जालिम तबला धिक–धिक बोले, तन–तन बोले सितार
जालिम नैना तोरे ।। ओ झुकि ओ मोरे यार० ।।
ये अंगिया मेरे मेत से आयी, दे पठई मेरे यार
जालिम नैना तोरे ।। ओ झुकि ओ मोरे यार० ।।
इस अंगिया में गोट लगे हैं हीरा लगे जड़दार
जालिम नैना तोरे ।। ओ झुकि ओ मोरे यार० ।।
ये नथिया मेरे मेत से आयी, दे पठई मेरे यार
जालिम नैना तोरे ।। ओ झुकि ओ मोरे यार० ।।
इस नथिया में मोती लगे हैं हीरा लगे जड़दार
जालिम नैना तोरे ।। ओ झुकि ओ मोरे यार० ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

34– झूकि आयो ाहर से ।

झूकि आयो ाहर से व्योपारी, झुकि आयो ाहर से व्योपारी ।

इस व्योपारी को भूख लगी है ।

पूरी पका दे मतवारी । झुकि आयो ाहर से व्योपारी ० ।।

इस व्योपारी को प्यास बहुत है ।

पनियां पिला मतवारी । झुकि आयो ाहर से व्योपारी ० ।।

इस व्योपारी को नींद लगी है ।

पलंग विछा दे मतवारी । झुकि आयो ाहर से व्योपारी ० ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

38

35– रथ लोटि चलो भगवान भरत ।

रथ लोटि चलो भगवान भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
दशरथ राजा बांस काटन गये ।
अंगूठा लागी फांस भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
रथ लोटि चलो भगवान भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
दशरथ राजा की तीनों रनियां ।
तीनों पहरा देय भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
रथ लोटि चलो भगवान भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
पहलो पहरा रानी कौशल्या ।
राजा चैन न होय भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
रथ लोटि चलो भगवान भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
दूसरो पहरा रानी सुमित्रा ।
राजा नींद न होय भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
रथ लोटि चलो भगवान भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
तिसरो पहरा रानी कैकई को ।
राजा घुरि–घुरि सोई भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
रथ लोटि चलो भगवान भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
मांग ले रानी जो वर मांगे ।
जो मन इच्छा होय भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
रथ लोटि चलो भगवान भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
जो मैं मांगू तुम ना दोगे ।
वचन अकारथ जाय भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
रथ लोटि चलो भगवान भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
दूंगा वही जो मांगे रानी ।
कसम राम की खाय भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
रथ लोटि चलो भगवान भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।

संग्रह कर्ता विपिन चन्द्र जोशी

39

राम लछिमन को वन में भेजो ।
भरत को दे दो राज भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
रथ लोटि चलो भगवान भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
दशरथ राजा धरणी पड़े हैं ।
केकई मन मुस्काय भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
रथ लोटि चलो भगवान भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
अरज करत हूँ पय्यां पड़त हूँ ।
मत भेजो बनवास भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
रथ लोटि चलो भगवान भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
जो चाहो सो कीजो राजा ।
वचन अकारथ जाय भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
रथ लोटि चलो भगवान भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
राम लछिमन वन को चले हैं ।
सीता लागी साथ भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
रथ लोटि चलो भगवान भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
दशरथ राजा स्वर्ग सिधारे ।
कैकई मन मुस्काय भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
रथ लोटि चलो भगवान भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
भरत कुँवर अब राजा बने हैं ।
साधू भेष बनाय भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
रथ लोटि चलो भगवान भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
सारी अयोध्या ोक में डूबी ।
रट रही राम को नाम भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।
रथ लोटि चलो भगवान भरत तुम परजा को दुख मत दीजो ।।

संग्रहकर्ता विपिन चन्द्र जोशी

40

36– मस्त महिना फागुन को ।

अछै हाँ रे बालम मस्त महिना फागुन को ।
घर–घर खेलें फाग, बालम मस्त महिना फागुन को । ।
अछे हाँ रे बालम ऐसो डडिया ल्या दीजो ।
जो मेरी स्योणि सुहाय बालम मस्त महिना फागुन को ।
अछे हाँ रे बालम ऐसी नथिया ल्या दीजो ।
जो मेरी नकिया सुहाय बालम मस्त महिना फागुन को ।
अछे हाँ रे बालम ऐसो कजरा ल्या दीजो ।
जो मेरी अंखियां सुहाय बालम मस्त महिना फागुन को ।
अछे हाँ रे बालम फूल जो फूले वन–वन में ।
लागत परम सुहाय बालम मस्त महिना फागुन को ।
अछे हाँ रे बालम कोयल बोले बागा में।
मीठे शबद सुहाय बालम मस्त महिना फागुन को ।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

37– हरिया पंख मुख लाल सुवा ।

हरिया पंख मुख लाल सुवा बोलिया जन बोले बागा में ।
हरिया पंख मुख लाल सुवा बोलिया जन बोले बागा में ।।
कौन दिशा से बादल आये ।
कौन दिशा घनघोर सुवा बोलिया जन बोले बागा में ।।
तेरो हरिया पंख मुख लाल सुवा बोलिया जन बोले बागा o ।।
पूरब दिशा से बादल आये ।
पश्चिम दिशा घनघोर सुवा बोलिय जन बोले बागा में ।।
तेरो हरिया पंख मुख लाल सुवा बोलिया जन बोले बागा o
इत जन बरसे मेघला इत जन बरसे मेघला ।
जहाँ पिया परदेश सुवा बोलिय जन बोले बागा में ।।
तेरो हरिया पंख मुख लाल सुवा बोलिया जन बोले बागा o ।।
सोना खरीदन पिया गयो, सोना खरीदन पिया गयो ।
सात समुन्दर पार सुवा बोलिय जन बोले बागा में ।।
तेरो हरिया पंख मुख लाल सुवा बोलिया जन बोले बागा o ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

42

38– मत पकड़ो चीर असुर मेरो ।

मत पकड़ो चीर असुर मेरो ।। एक बोल ।।
मत पकड़ो चीर असुर मेरो मत पकड़ो हो ।।
तुम तो मेरे जेठ लगत हो ।
मैं हूँ असुर बहु तेरी मत पकड़ो हो ।। मत पकड़ो चीर ० ।।
तुमरे कुल की आन घटेगी ।
कृ ण है मेरो रखवालो मत पकड़ो हो ।। मत पकड़ो चीर ० ।।
अर्जुन बलि की नार कहाऊँ ।
भीम बली देवर मेरो मत पकड़ो हो ।। मत पकड़ो चीर ० ।।
कहाँ तेरो भीम कहाँ तेरो अर्जुन ।
कहाँ तेरो कृष्ण है रखवालो मत पकड़ो हो ।। मत पकड़ो चीर ० ।।
राजा दुशासन बड़ो अभिमानी ।
सभा में ले गयो वर जोरी मत पकड़ो हो ।। मत पकड़ो चीर ० ।।
केश पकड़कर सभा में लायो ।
राखो लाज मुकुट वालो मत पकड़ो हो ।। मत पकड़ो चीर ० ।।
रो–रो द्रोपति कृ ण पुकारे ।
तुम विन नाथ को हो मेरो मत पकड़ो हो ।। मत पकड़ो चीर ० ।।
खींचत चीर दुशासन हारो ।
तिल भर अंग न खुलि पायो मत पकड़ो हो ।। मत पकड़ो चीर ० ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

39– भगीरथ गंगा ले आये ।

कठिन तपस्या कीन्ही भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।

साठ हजार सगर सुत भये हैं ।

मन में गर्व समाय भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।।

कठिन तपस्या कीन्ही भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।

हरियो निशाचर यज्ञ को घोड़ा ।

मुनि के द्वार बंधाय भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।।

कठिन तपस्या कीन्ही भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।

खोजत–खोजत रसातल पहुँचे ।

घोड़ा वहाँ मिल जाय भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।।

कठिन तपस्या कीन्ही भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।

पीटन लागे तपस्वी मुनि को ।

मिल कर के सब भाई भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।।

कठिन तपस्या कीन्ही भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।

जनम लियो तुम सगर के कुल में ।

गंगा छोड़ी लाय भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।।

कठिन तपस्या कीन्ही भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।

बार–बार कर शिव की तपस्या ।

तब शिव दर्शन देय भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।।

कठिन तपस्या कीन्ही भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।

ब्रह्म कमण्डल निकली गंगा ।

शिव की जटा में समाय भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।।

कठिन तपस्या कीन्ही भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।

एक बूंद जटा से निकली ।

तीन्ही ऽऽ रूप समाय भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।।

कठिन तपस्या कीन्ही भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।

आगे– आगे चले भगीरथ ।

पीछे गंगा समाय भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।।

कठिन तपस्या कीन्ही भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।

साठ हजार सगर सुत तारे ।

दीनहिं स्वर्ग पठाय भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।।

कठिन तपस्या कीन्ही भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।

भागरिथी गंगा नाम जो लेवे ।

कुल तारण हो जाय भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।।

कठिन तपस्या कीन्ही भगीरथ, भगीरथ गंगा ले आये ।

45

40— भज दशरथ नन्दन जनक लली ।

भज दशरथ नन्दन जनक लली । एक बोल ।।

भज दशरथ नन्दन जनक लली । दो बोल ।।

कौन राजा घर राम भये हैं ।

कौन राजा घर भई है लली,भज दशरथ नन्दन जनक लली ।।

भज दशरथ नन्दन जनक लली ।

दशरथ राजा घर राम भये हैं ।

जनक राजा घर भई है लली,भज दशरथ नन्दन जनक लली ।।

भज दशरथ नन्दन जनक लली ।

कितने बरस के राम भये हैं ।

कितने बरस की भई है लली,भज दशरथ नन्दन जनक लली ।।

भज दशरथ नन्दन जनक लली ।

चौदह बरस के राम भये हैं ।

बारह बरस की भई है लली, भज दशरथ नन्दन जनक लली ।।

भज दशरथ नन्दन जनक लली ।

जनक स्वयंबर यज्ञ रचो है ।

तोड़ धनुष की बात चली, भज दशरथ नन्दन जनक लली ।।

46

देश–विदेश के राजा आये ।

धनुष उठै ना तिल भरी, भज दशरथ नन्दन जनक लली ।।

भज दशरथ नन्दन जनक लली ।

विश्वामित्र संग राम लछिमन ।

पुष्प विछाये गलि गली,भज दशरथ नन्दन जनक लली ।।

भज दशरथ नन्दन जनक लली ।

गढ़ लंका से रावण आए ।

धनुष उठै ना तिल भरी,भज दशरथ नन्दन जनक लली ।।

भज दशरथ नन्दन जनक लली ।

विश्वामित्र से आज्ञा ले के ।

धनुष जो तोड़े राम बली,भज दशरथ नन्दन जनक लली ।।

भज दशरथ नन्दन जनक लली ।

सीता ने जयमाल पैराई ।

ऐसी जोड़ी बनी भली,भज दशरथ नन्दन जनक लली ।।

41– होली खेले पशुपति नाथ ।

होली खेलें पशुपति नाथ मिलकर बागा में ।

ब्रह्मा लोक में ब्रह्मा जी खेलें ।

सरस्वती खेलें साथ मिलकर बागा में।।

होली खेलें पशुपति नाथ मिलकर बागा में ।

बैकुण्ठ लोक में वि णू खेलें ।

कमला खेलें साथ मिलकर बागा में।।

होली खेलें पशुपति नाथ मिलकर बागा में ।

कैलाश धाम में शिव जी खेलें ।

गौरा खेलें साथ मिलकर बागा में।।

होली खेलें पशुपति नाथ मिलकर बागा में ।

बृन्दावन में कृष्ण जी खेलें ।

राधा जी खेलें साथ मिलकर बागा में।।

होली खेलें पशुपति नाथ मिलकर बागा में ।

परवत शिखर में दुर्गा खेलें ।

महामाया खेलें साथ मिलकर बागा में।।

होली खेलें पशुपति नाथ मिलकर बागा में ।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

42– भर शीशी भर दे कलाल ।

भर शीशी भर दे कलाल मेरो पिया मधु को चरवय्या ।

सौ शीशी भर दे कलाल मेरो पिया मधु को चरवय्या ।।

भर पिचकारी बौज्यून मारी ।

साली पे डालो गुलाल ।। मेरो पिया o ।।

हमने पिया को कपलि दिखाई ।

पूछे वो बिंदिया दाम ।। मेरो पिया o ।।

हमने पिया को छतिया दिखाई ।

पूछे वो अंगिया दाम ।। मेरो पिया o ।।

हमने पिया से सोना मंगायो ।

वो ले आयो कलाल ।। मेरो पिया o ।।

रंग रंगो हे ब्रज मण्डल यो ।

काटन लागो धमाल ।। मेरो पिया o ।।

खेलन लागो जब पिया होली ।

कर गयो अंगिया लाल ।। मेरो पिया o ।।

भर शीशी भर दे कलाल मेरो पिया मधु को चरवय्या ।

संग्रह कर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

;४९ढ

43– छिटका दे केश भंवर काली ।

छिटका दे केश भंवर काली छिटका दे हो ।
जब तेरी स्योणि में डंडिया हो तो ।
तेरो डंडिया मुझे प्यारो, छिटका दे हो ।।
छिटका दे केश भंवर काली छिटका दे हो ।
जब तेरी कपलि में विंदिया हो तो ।
तेरो विंदिया मुझे प्यारो, छिटका दे हो ।।
छिटका दे केश भंवर काली छिटका दे हो ।
जब तेरी अंखियां मे कजरा हो तो ।
तेरो कजरा मुझे प्यारो, छिटका दे हो ।।
छिटका दे केश भंवर काली छिटका दे हो ।
जब तेरी नकिया में नथिया हो तो ।
तेरो नथिया मुझे प्यारो, छिटका दे हो ।।
छिटका दे केश भंवर काली छिटका दे हो ।
जब तेरी छतिया में अंगिया हो तो ।
तेरो अंगिया मुझे प्यारो, छिटका दे हो ।।
छिटका दे केश भंवर काली छिटका दे हो ।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

44– रंग बरसे भीगे चुनर वाली ।

रंग बरसे भीगे चुनर वाली रंग बरसे ।।
सोने की थाली में भोजन परोसा ।।
खाये गोरी का यार बलम तरसे रंग बरसे ।।
रंग बरसे भीगे चुनर वाली रंग बरसे ।।
लोंगा ईलाइची का बीड़ा लगाया ।।
खाये गोरी का यार बलम तरसे रंग बरसे ।।
रंग बरसे भीगे चुनर वाली रंग बरसे ।।
बेला चमेली का सेज लगाया ।।
सोये गोरी का यार बलम तरसे रंग बरसे ।।
रंग बरसे भीगे चुनर वाली रंग बरसे ।।

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी

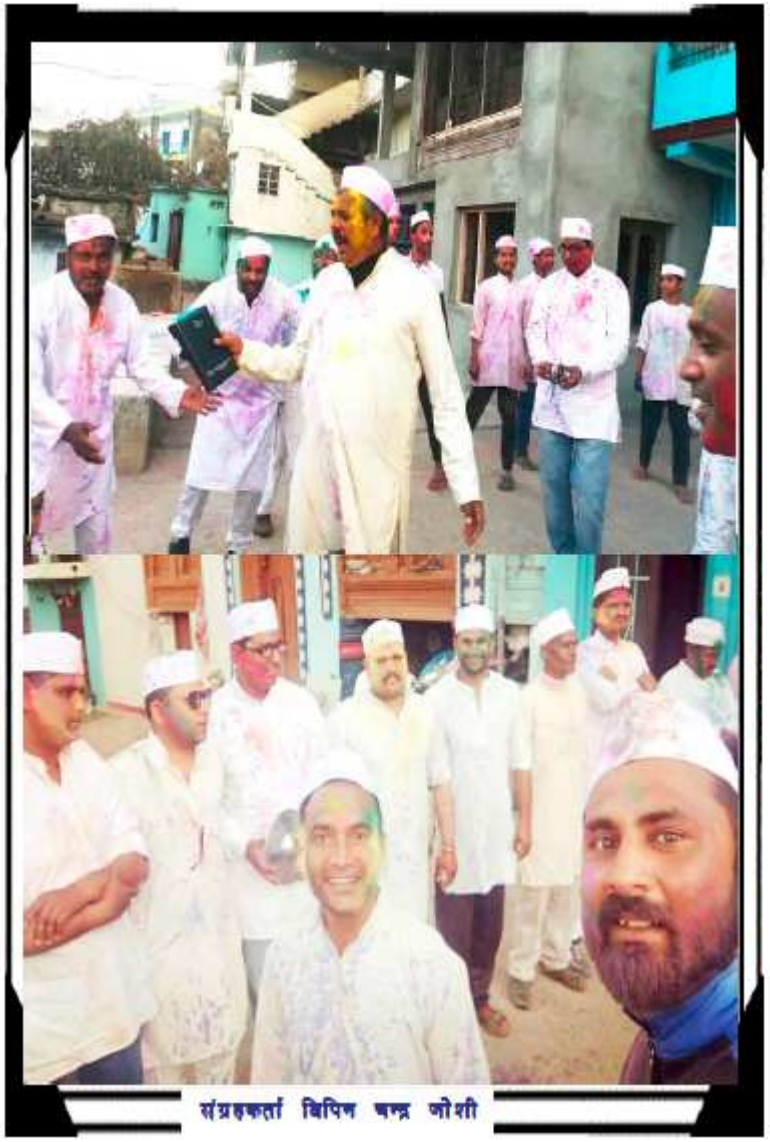

संग्रहकर्ता बिपिन चन्द्र जोशी